आने वाले नये युग की रचना का आधार बने कलाकार–दादी हृदयमोहिनी

जिससे संस्कृति नष्ट हो कला नहीं बला है–शिराज

आबू रोड, 8 मई, निसं। कला मनुष्य के जीवन का अंग है। हर मनुष्य के अन्दर परमात्मा ने गुणों के रूप में कलाओं का भंडार बनाया है। इससे निखारने की आवश्यकता है। आने वाले नये युग की रचना का आधार बने कलाकार। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज संस्था अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने व्यक्त किये। वे राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के कला एवं संस्कृति प्रभाग की ओर से परमात्म ज्ञान द्वारा कला का दिव्यीकरण विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के उदघाटन अवसर पर देश भर से आये कलाकारों को सम्बोधित कर रही थी।

आगे उन्होंने कहा कि प्राचीन समय में लोगों में दिव्य गुणों की धारणा, सर्वश्रेष्ठ जीवन प्रणाली, पारिवारिक संगठन को मजबूत बनाने के लिए कलाओं का उपयोग किया जाता था। परन्तु बदलते समय के दौर में भौतिकता और पश्चिमी संस्कृति की चकाचौध ने अश्लीलता और गलैमरस में बदल दिया। आज पूरा का पूरा व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक ढांचा बदल गया है। अब समय की मांग है कलाकार अपनी मूल्यनिष्ठ कलाओं से एक बेहतर समाज की रचना में मददगार बनें। परमात्मा की बनायी इस सुन्दर नगरी में मूल्यों का वास हो ओर प्रत्येक इंसान सुखी और खुश रहे।

लोक कला फाउण्डेशन अहमदाबाद के संस्थापक तथा मैनेजिंग ट्रस्टी जोरावर सिंह जाधव ने कहा कि अब कलायें तो हो रही है परन्तु नकात्मकता से भरी पड़ी है। जिससे आज की युवा पीढ़ी के साथ साथ समाज की पूरी प्रक्रिया तहस नहस हो गयी है। अब तो केवल पैसा और नाम कमाने के लिए भौड़ापन प्रदर्शन किया जा रहा है। इससे रोकने के लिए कलाकारों को ही आगे आना होगा। वर्ल्ड रिन्युवल स्प्रीचुअल ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी ब्र0 कु0 रमेश शाह ने कहा कि परमात्म मूल्यों से परिपूर्ण दुनियां बनाने का महान कार्य कर रहा है। उसके सार्थक संदेश को जन–जन तक पहुंचाने तथा उसे आत्मसात करने के लिए कलाकारों को अपनी कलाओं का उपयोग करना चाहिए। क्योंकि कलाकारों की नकल लोग शिघ्र ही कर लेते हैं।

प्रसिद्ध टीवी सीरियल कामेडी कलाकार अहमदाबाद के शिराज रंगवाला ने कहा कि जो कला संस्कृति को बिगाड़े वह कला नहीं बला है। सच्चा कलाकार वही है जो आने वाले नये युग बनाने में अपनी कलाओं का उपयोग करे। ब्रह्माकुमारीज संस्था के कार्यकारी अधिकारी ब्र0 कु0 मृत्युंजय ने कहा कि आज केवल कलाओं में ही नहीं बल्कि प्रत्येक कर्म में दिव्ययीकरण करने की आवश्यकता है इसी से ही दिव्य और सुन्दर समाज की स्थापना होगी और देश व दुनियां से अपराध का सफाया होगा।

त्रिपुरा के सुप्रसिद संतूर वादक पंडित दुलाई राय ने कहा कि पहले के मुताबिक अब लोगों का संतूर वादन से मोह भंग होता जा रहा है। क्योंकि आधुनिक दुनियां में नये–नये वादनों का आविष्कार होने के कारण लोगों का रूझान बढ़ता जा रहा है। कला एवं संस्कृति प्रभाग की उपाध्यक्ष ब्र0 कु0 ऊषा ने कहा कि अपराध मुक्त समाज की स्थापना के लिए कलाकारों को प्रेरित करना इस सम्मेलन का लक्ष्य है।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में नन्हें मुन्ने बच्चों ने स्वागत नृत्य प्रस्तुत कर लोगों का स्वागत किया। इस सम्मेलन में टीवी कलाकार, एक्टर, डायरेक्टर, मूर्तिकलाकार तथा अन्य कलाकार भाग ले रहे हैं। यह सम्मेलन तीन दिन चलेगा। कार्यक्रम का संचालन ज्ञान सरोवर की ब्र0 कु0 गीता ने किया। कार्यक्रम का दीप जलाकर उदघाटन किया गया।

फोटो, 8एबीआरओपी, 1, 2, 3, 4, 5 दीप जलाकर कार्यक्रम का उदघाटन करते अतिथि, सम्बोधित करती दादी हृदयमोहिनी जी तथा अन्य।